National Journal of Multidisciplinary Research and Development
www.newresearchjournal.com
ISSN: 2455-9040
Received: 13-07-2025, Accepted: 12-08-2025, Published: 27-08-2025
Volume 10, Issue 3, 2025, Page No. 45-49

माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की कार्य संतुष्टि पर शिक्षण अभिक्षमता के प्रभाव का अध्ययन

शिप्रा अग्रवाल[1], डॉ0 प्रमोद कुमार राजपूत[2]
शोध छात्रा, शिक्षाशास्त्र विभाग, श्री वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय, गजरौला, अमरोहा, उत्तर प्रदेश, भारत
एसोसिएट प्रोफेसर, शिक्षाशास्त्र विभाग, श्री वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय, गजरौला, अमरोहा उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश
वर्तमान समय में कार्य (व्यवसाय) की संतुष्टि लोगों के सामने सबसे बड़ी चुनौती के रूप में उभर कर सामने आती है। निजीकरण के इस युग में तकनीकी सुधार के साथ–साथ नौकरी की असुरक्षा की भावना भी तेजी से बढ़ रही है। इसलिए यह प्रश्न उठता है कि क्या नौकरी में संतोष को भावना और सरकारी और निजी वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों में शिक्षकों की अवस्था में कोई अन्तर है या नही।

मूल शब्दः कार्य, चुनौती संतुष्टि, तकनीकी, निजीकरण, नौकरी, शिक्षक, अवस्था

शिक्षक का अपने कार्य के प्रति संतोष और तनाव ऐसी प्रक्रिया है जो शिक्षा प्रणाली और अध्यापकों के मध्य चलती है। शिक्षकों में व्यवसाय के प्रति नाकारात्मक और सकारात्मक भावनाएं उत्पन्न होती है। आज के युग में कार्य के प्रति सतुंष्टि समाप्त होती जा रही है। नौकरी में संतुष्टि अध्यापक के दृष्टिकोण को दर्शाती है। यह अनेक कारकों से प्रभावित होती है। जिसमें निम्नलिखित गतिविधियाँ शामिल हैः–

1. स्कूल प्रबंधन से संबंधित गतिविधि,
2. व्यवसायिक और व्यक्तिगत उन्नति से संबंधित गतिविधियाँ,
3. अतिरिक्त कक्षा–कक्ष गतिविधियाँ,
4. पर्यवेक्षण से संबंधित गतिविधियाँ।

इसी प्रकार यदि अध्यापकों के दैनिक कार्यों का अध्ययन किया जाए तो कुछ व्यक्तिगत कारक भी है जो व्यवसाय को प्रभावित करते है जैसे–

1. आयु
2. स्वास्थ्य,
3. आकाक्षाएं,
4. प्रेरणाएं,
5. सामाजिक संबंध।

अपने अध्यापन के आधार पर (हॉटक ने 1990) में नौकरी की संतुष्टि के निम्नलिखित मुख्य घटकों का सुझाव दिया है :–

1. जिस तरह से व्यक्ति अप्रिय स्थितियों पर प्रतिक्रिया करता है।
2. जिस सुविधा के साथ वह खुद को समायोजित करता है।
3. सामाजिक और आर्थिक समूहों में खुद की पहचान करते है।
4. कार्य कुशलता, हितों और कार्यक्रमों की तैयारी के संबंध में काम की प्रवृति व सुरक्षा, निष्ठा।

यह वास्तविक कारक है जो नौकरी की सतुंष्टि के लिए एक प्रमुख तरीके से योगदान देते है। वास्तव में नौकरी की सतुंष्टि उस व्यक्ति के भावात्मक समायोजन और भावात्मक रूप से अस्थिरता से संबंधित है न केवल सामाजिक और निजी जीवन में स्वंय को समायोजित करने में भी कठिनाई का सामना करना पड़ता है, बल्कि नौकरी के लिए भी है जिसमें वह असंतुष्ट हो रहे है। नौकरी की सतुंष्टि और तनाव विभिन्न कारकों जैसे कि पर्यवेक्षण, नीतियों और प्रशासन पर संगठन, वेतन और गुणवता आदि शारीरिक और मानसिक संतोष से प्रभावित हो सकती है।
मानव स्वभाव में निहित संवेग व्यक्ति के मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करते है जो कार्य, तथा स्थिति से उत्पन्न होते है। व्यक्ति के प्राकृति संवेग कार्य भार व परिस्थिति से अवश्य प्रभावित होते है। व्यक्ति प्रत्येक कार्य में अपने हित को ध्यान में रखता है जब उसके कार्य में तनाव उत्पन्न होता है तो कार्य के प्रति संतुष्टि नही रहती।
राष्ट्र में असंतोष एक व्यक्तिगत परिणाम है। यदि शिक्षक पूरी तरह से अपने पैशे में शामिल नही है या उन्हे अपने कर्तव्य के प्रति कोई जिम्मेदारी नही होती तो ऐसे अध्यापक अपने आपको धोखा तो देते ही है और पूरे समाज को और देश के भविष्य के लिए भी हानिकारक है। कुछ व्यवसायिक स्थिति के कारण शिक्षकों की बड़ी संख्या में नौकरी की संतुष्टि गायब हो रही है, जिससे तनाव, अरूचि उत्पन्न होता है; वे निम्नलिखित कारण है जो सरकारी व निजि दोनों क्षेत्रों में प्रभावित करते है–

1. व्यवसाय या नौकरी में सुरक्षित होने का अभाव,
2. काम का दबाव,
3. आवास से कार्य स्थल की दूरी,
4. कार्य को एक रूपता,
5. अपर्याप्त व अनियमित वेतन,
6. सामाजिक स्थिति का अभाव, 7. राजनैतिक हस्तक्षेप, 8. छात्रों में अनुशासनहीनता।

नौकरी की सतुंष्टि का अध्ययन अपेक्षाकृत गंभीर घटना है, जिसे संभवतः पश्चिमी हिलेरी, कंपनी (2009–10) में माया द्वारा आयोजित प्रसिद्ध हौथॉर्न अध्ययन के साथ शुरू किया जा सकता है। नौकरी और सतुंष्टि दो शब्द है जो कर्तव्यों और जिम्मेदारियों का समायोजन है, और सम्पूर्ण रूप से कर्मचारियों को व्यक्तिगत रूप से प्रभावित करता है।
संतोष भावनाओं और उत्तेजनाओं का एक समूह है अधिकांश व्यक्ति न केवल आजिविका के साधन अर्जित करने के लिए काम करते है अपितु नौकरी के काम के जरिए अपनी क्षमताओं को दिखाकर स्वंय को प्रदर्शित भी करते है।
कार्य संतुष्टि व्यक्ति को आन्नद और उपलब्धि की भावना देता है जिससे कार्य का स्तर बढ़ता है। व्यक्ति जब कार्य से तनाव मुक्त होता है तब वह प्रत्येक परिस्थिति को अपने अनुकूल बना लेता है और अपने कार्य का नेतृत्व कर सकता है। शिक्षकों के गुणों पर हमेशा ध्यान दिया जाना चाहिए क्योंकि एक राष्ट्र के युवाओं का विकास अतंतः शिक्षकों पर निर्भर करता है जो कड़ी केहनत, स्नेह व कर्तव्य से छात्रों व शिक्षण पर रूचि रखते है। (एन0 पीपिल्ले) ने यह भी राय दी है कि शिक्षकों के मूल्यों की मान्यता मुख्य रूप से सामाजिक, पुनर्निर्माण में श्रमिकों के रूप में सभ्यता के साथ एक पारम्परिक संस्कृतिक को सुसंगत करती है।

सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन

स्मिथ (2016) के अनुसार 'जॉब सैटीसफिकेशन' एक प्रभावी चरण है जो एक तरफ कार्यकर्ता की वर्तमान नौकरी का एक कार्य है और दूसरी और उसके अनुकूलन स्तर का फ्रेम है' नौकरी से संतुष्टि का अर्थ है आत्म, समाज और काम का समायोजन''।

बैलॉक (2012) के अनुसार 'नौकरी से संतुष्टि को एक ऐसे रवैये के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जिसके परिणामस्वरूप किसी काम में किसी कर्मचारी द्वारा विशिष्ट पसन्द और नापसन्द अनुभव के सतुंलन और योग का परिणाम मिलता है।''

शोध की आवश्यकता तथा महत्व

आदि काल से विद्वानों का मत यही रहा है कि स्वस्थ भारीर में स्वस्थ मन का वास होता है और मानसिक प्रक्रियायें सुचारू रूप से कार्य करती है। कभी–कभी यह भी पाया जाता है कि दोनों (शीर तथा मानसिक प्रक्रियायें) का तालमेल ठीक बना हुआ है, पर्याप्त संतुलन है फिर भी व्यक्ति अपने को ऐसी स्थिति में पाता है कि वह उतना नहीं प्राप्त कर पा रहा है जितना उसे मिलना चाहिए था। कभी–कभी वह यह भी सोचता है कि उसके जीवन में कही कोई कमी है। कभी–कभी उसे यह अनुभूति होती है कि अब वह और अधिक पाने के लिए संघर्ष करने में असमर्थ है और अन्त में उसकी धारणा बन जाती है कि इतना सब करने की कोई आवश्यकता नहीं है, जो है वह पर्याप्त है।

कार्य संतुष्टि किसी कर्मचारी में अंतर्निहित उसकी बहुत सी मनोवृत्तियों का परिणाम होता है। इन मनोवृत्तियों का संबंध मात्र कार्य से होता है तथा इसका संबंध कई विशिष्ट तत्वों में भी रहता है, जैसे पारिश्रमिक, पर्यवेक्षक, रोजगार की निरंतरता कार्य अवस्थायें, प्रोन्नति के अवसर, कार्य का न्यायपूर्ण मूल्यांकन उसकी सामाजिक प्रतिष्ठा आदि किसी न किसी रूप में कार्य संतुष्टि पर अवश्य प्रभाव डालती है। कर्मचारी के सर्वांगीण विकास के लिए अधिक वेतन, अच्छा रहन–सहन, शिक्षा तथा चिकित्सा संबंधी सुविधायें, भविष्य की सुरक्षा आदि एक मात्र साधन नहीं है बल्कि उसका बौद्धिक विकास और संवेगात्मक अभिव्यक्ति के पर्याप्त अवसर सब महत्वपूर्ण कारक ही बौद्धिक विकास समझने की क्षमता प्रदान करता है और संवेगात्मक अभिव्यक्ति जीवन संबंधी समस्याओं के ताल–मेल स्थापित करने में सहायक होती है।

शिक्षा वह आधार है जिस पर समाज तथा विद्यालय का विकास निर्भर करता है। विद्यालय शिक्षा प्रदान करने का कार्य करते हैं, विद्यालय में यह शिक्षा शिक्षकों द्वारा प्रदान की जाती है। शिक्षकों का यह कार्य अत्यन्त महत्वपूर्ण है तथा इस पुनीत कार्य के लिए ही वह गौरवान्वित, गरिमामन्दित है। अतः कहा जा सकता है कि विद्यालय शिक्षा में गुणात्मक सुधार के लियें अध्यापक शिक्षा एक अनिवार्य आवश्यकता है। क्योंकि शिक्षक शिक्षार्थियों के जीवन में सुधार करने वाले महत्वपूर्ण कारक होते हैं तथा विकासोन्मुख शिक्षा की प्रक्रिया में उल्लेखनीय भूमिका निभा सकते हैं। शिक्षक की गुणवत्ता का सीधा प्रभाव शिक्षा की गुणवत्ता पर पड़ता है। शिक्षक एक व्यवसायिक कार्य करने वाला व्यक्ति होता है, उसे गहन तथा प्रभावी प्रशिक्षण प्राप्त होता है जिसके आधार पर उसका प्रदर्शन निर्धारित होता है। शिक्षक के लियें व्यवसायिक दक्षताओं को प्राप्त करना अत्यन्त आवश्यक है। ये व्यवसायिक दक्षतायें वह सेवापूर्ण प्रशिक्षण के समय प्राप्त करता है तथा इनका प्रयोग सेवाकाल में करता है। जिस प्रकार एक श्रेष्ठ चिकित्सक, वकील, इन्जीनियर, प्रबन्धक आदि के लियें कुछ मूलभूत आवश्यकतायें तथा प्रतिबद्धतायें होती हैं उसे प्रकार एक अच्छा शिक्षक बनने के लियें बुनियादी समझा, सिद्धान्तों की तथा उन्हें अपने अन्तर्मन में उतारने की आवश्यकता होती है। शिक्षक–प्रशिक्षण एक आत्म–विकासी व्यवसाय कहलाता है क्योंकि 'अध्यापक कार्य' व्यक्ति केवल जीविकार्जन के लियें ही नहीं करता है वरन् उसे वह आत्म–प्रेरणा तथा सामाजिक सेवा के भाव से भी करता है।

संबंधित साहित्य की समीक्षा

संबंधित साहित्य से तात्पर्य अनुसन्धान की समस्या से संबंधित स्त्रोत से है जिसके माध्यम से शोधकर्ता को अपने शोध कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है। इन स्त्रोतों में शोध संबंधित सभी प्रकार की पुस्तकों, पत्र–पत्रिकाओं, प्रकाशित शोध प्रबन्धों, ज्ञानकोषों तथा अभिलेखों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

ऑनलाइन पत्र–पत्रिकायें एवं साइट

इन्टरनेट पर उपलब्ध ऑनलाइन पत्र–पत्रिकायें तथा साइट (पी0डी0एफ0) का अध्ययन करके शोधार्थी ने उनका विवरण निम्नवत् प्रस्तुत किया है :–

मोरे, आरती (1988) ''माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों के व्यक्तित्व तथा अभिवृत्तियों का उनके शिक्षण तथा उसकी प्रभावशीलता के संध में अध्ययन'' इन्होंने अपने पी0एच0डी0 स्तरीय अध्ययन में निम्न निष्कर्ष प्राप्त किया। 16 व्यक्तित्व कारकों में केवल 8 कारक ऐसे पाये गये जो उन अध्यापकों की शिक्षण प्रभावशीलता से सकारात्मक सह–संबंधित थे। इनमें से बुद्धिमता तथा व्यक्तित्व गुण महत्वपूर्ण पाए गये हैं।

कुमार, अजित (1996) में– ''शिक्षक प्रशिक्षकों में शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति'' शीर्षक पर पी0एच0डी0 स्तरीय शोधकार्य किया और अपने अध्ययन में पाया कि महिला व पुरूष अध्यापक प्रशिक्षुओं में शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अंतर पाया गया।

लिली पुष्पम (2003) ने– ''कोयम्बटूर में महिला अध्यापकों में शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति तथा कार्य सन्तुष्टि'' शीर्षक पर एक शोध पत्र हेतु 725 अध्यापकों पर शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन किया गया तथा पाया कि महिला अध्यापकों की शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर पाया गया तथा महिलाओं की कार्य सन्तुष्टि तथा शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति में सकारात्मक सह–संबंध पाया गया।

उसमान और ओलिम (2004) ने– ''प्राथमिक विद्यालयों के सेवारत् एवं सेवापूर्व अध्यापकों में शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति'' शीर्षक पर शोध पत्र प्रस्तुत किया तथा निष्कर्ष में यह पाया कि शिक्षण व्यवसाय की शिक्षण प्रणाली के लिये सकारात्मक परिणाम था कि उनकी अभिवृत्ति उनके कार्य तथा विद्यार्थियों की उपलब्धि को अधिक महत्व देता है। महिला अध्यापिकाओं में पुरूषों की तुलना में शिक्षण व्यवसाय के प्रति अधिक सकारात्मक अभिवृत्ति पाई गई।

शुक्ला, एस0 (2009) ने– ''शिक्षण दक्षता, कार्य प्रतिबद्धता तथा कार्य सन्तुष्टि'' शीर्षक पर कश्मीर विश्वविद्यालय से प्रयोजनात्मक शोध कार्य किया तथा शोध के निष्कर्ष में बताया कि कार्य प्रतिबद्धता तथा कार्य सन्तुष्टि में उच्च धनात्मक सह–संबंध पाया गया। परन्तु शिक्षण दक्षता एवं कार्य सन्तुष्टि में निम्न स्तर का धनात्मक सह–संबंध पाया गया तथा व्यवसायिक प्रतिबद्धता के कुछ आयामों में नकारात्मक सह–संबंध पाया गया।

प्रस्तुत अध्ययन संबंधित साहित्य की समीक्षा में शिक्षकों की शिक्षण दक्षता तथा शिक्षण व्यवसाय के प्रति उनकी अभिवृत्ति का उनके प्रदर्शन क्षेत्र या कार्य क्षेत्र पर पड़ने वाले प्रभाव का स्पष्टीकरण दिया गया है।

अध्ययन क्षेत्र

ऊधमसिंहनगर में विभिन्न क्षेत्रों में अवस्थित माध्यमिक विद्यालयों में विभिन्न प्रकार की कार्यदशाओं में शिक्षा की ज्योति जला रहे शिक्षक–शिक्षिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि, शिक्षण–अभिक्षमता तथा कार्य–सन्तुष्टि का पता लगाने तथा यह जानने की जिज्ञासा कि क्या अच्छे शैक्षिक रिकॉर्ड और अच्छी शिक्षण अभिक्षमता, वाला व्यक्ति यदि शिक्षण व्यवसाय में आ गया है तो क्या वह उन व्यक्तियों से जिनका शैक्षिक रिकॉर्ड कमजोर है या जिनमें शिक्षण–अभिक्षमता अधिक नहीं है, उनसे ज्यादा सन्तुष्ट है?

शोधकर्ती के मन में थी। इसीलियें अध्ययन हेतु निम्न समस्या का चयन किया गया।

अध्ययन के उद्देश्य

1. माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षक–शिक्षिकाओं की शैक्षिक–अभिक्षमता का अध्ययन करना।
2. माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षक–शिक्षिकाओं की कार्य–सन्तुष्टि का अध्ययन करना।
3. माध्यमिक विद्यालय के शिक्षक–शिक्षिकाओं की शैक्षिक–अभिक्षमता एवं कार्य–सन्तुष्टि में सह–सम्बन्ध ज्ञात करना।

परिकल्पनाऐं

1. माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षक–शिक्षिकाओं की शैक्षिक–अभिक्षमता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षक–शिक्षिकाओं की कार्य–सन्तुष्टि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
3. माध्यमिक विद्यालय के शिक्षक–शिक्षिकाओं की शैक्षिक–अभिक्षमता एवं कार्य–सन्तुष्टि में कोई सार्थक सह–सम्बन्ध नहीं है।

शोध का सीमांकन

1. प्रस्तुत शोध उत्तराखण्ड राज्य के ऊधमसिंहनगर क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षक एवं शिक्षिकाओं पर सम्पन्न किया गया।
2. इसमें माध्यमिक विद्यालयों के उन शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं को न्यादर्श में सम्मिलित किया गया है जो शिक्षण कार्य किया गया है।
3. अध्ययन में शहरी तथा ग्रामीण दोनों क्षेत्रों में कार्यरत शिक्षक एवं शिक्षिकाओं में कोई अन्तर नहीं किया है।

शोध समस्या कथन

ऊधमसिंहनगर में विभिन्न क्षेत्रों में अवस्थित माध्यमिक विद्यालयों में विभिन्न प्रकार की कार्यदशाओं में शिक्षा की ज्योति जला रहे शिक्षक–शिक्षिकाओं की कार्य–सन्तुष्टि का पता लगाने तथा यह जानने की जिज्ञासा कि क्या अच्छे शैक्षिक रिकॉर्ड वाला व्यक्ति यदि शिक्षण व्यवसाय में आ गया है तो क्या वह उन व्यक्तियों से जिनका शैक्षिक रिकॉर्ड कमजोर है या जिनमें शिक्षण–अभिक्षमता अधिक नहीं है, उनसे ज्यादा सन्तुष्ट है?

समस्या का परिभाषीकरण–

प्रस्तुत शोध समस्या में प्रयुक्त शब्दावली का अर्थ निम्नवत् है–

माध्यमिक विद्यालय

प्रस्तुत अध्ययन से तत्पर्य उत्तराखण्ड में 10+2 की शिक्षा प्रदान करने वाले सरकारी एवं अर्द्धसरकारी माध्यमिक विद्यालयों का अध्ययन किया गया है।

शिक्षक

यहाँ शिक्षकों से तात्पर्य 10+2 की शिक्षा प्रदान करने वाले माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत पुरूष एवं महिला शिक्षकों का अध्ययन किया गया है।

कार्य–सन्तुष्टि

यहाँ इसका तात्पर्य शोध के अनुसार मापन यंत्रों का प्रयोग किया गया है।

शिक्षण–अभिक्षमता

प्रस्तुत अध्ययन में इसका तात्पर्य प्रमापीकृत परीक्षण 'टीचिंग एप्टीट्यूड टैस्ट' के प्रशासन से प्राप्त अंकों के आधार पर किया गया है।

जनसंख्या और न्यादर्श

जनसंख्या

शोध में जनसंख्या का अर्थ भिन्न होता है। जनसंख्या से तात्पर्य सम्पूर्ण इकाईयों के निरीक्षण से होता है। इसमें कुछ इकाईयों का चयन करके न्यादर्श बनाया जाता है। जनसंख्या की संख्या में सभी प्रकार (स्त्री, पुरूष, बच्चे) का लेखा जोखा तैयार किया जाता है। शोध की जनसंख्या में एक विशिष्ट समूह के समस्त व्यक्तियों को सम्मिलित किया जाता है, वह सजातीय होते हैं। जनसंख्या शोध का आवश्यक आधार होती है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोध छात्रा ने ऊधमसिंहनगर जिले को अपने शोध में शामिल किया गया।

न्यादर्श

बोगार्डस (1954) के अनुसार– ''पूर्व निर्धारित योजना के अनुसार एक समूह में से एक निश्चित प्रतिशत की इकाईयों का चुनाव करना ही प्रतिदर्श प्रक्रिया है।'' जनसंख्या की सभी इकाईयों का अध्ययन करना न तो वांछनीय है और न ही संभव है। यदि कहीं संभव भी है तो बहुत खर्चीला व समय बाध्य है इन्हीं कठिनाईयों को ध्यान में रखते हुए न्यादर्श का चयन किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में न्यादर्श की यादृच्छिक विधि के माध्यम से शोधकर्ती द्वारा माध्यमिक स्तरीय शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं का चयन किया है।

शोध विधि–

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की कार्य– सन्तुष्टि पर शैक्षिक–उपलब्धि एवं शिक्षण–अभिक्षमता के प्रभाव का अध्ययन करना है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लियें शोध की ''सर्वेक्षण अनुसन्धान विधि'' को प्रयोग में लाया जाता है। ऐसे अध्ययनों में जिसमें शोधकर्ती किसी विशेष स्थान पर जाकर अवस्थाओं या परिस्थितियों से संबंधित सही सूचनाओं का संकलन करता है, सर्वेक्षण अनुसन्धान विधि कहा जाता है।

शोध में प्रयुक्त उपकरण

शोधकर्ती अपने अध्ययन में तीनों चरों के मापन हेतु जिन उपकरणों का प्रयोग किया है उनका संक्षिप्त विवरण निम्नलिखित है :–

1. शिक्षण–अभिक्षमता परीक्षण

शिक्षकों की शिक्षण–अभिक्षमता को ज्ञात करने के लिए डॉ0 जयप्रकाश और डा0 आर0पी0 श्रीवास्तव द्वारा निर्मित एवं प्रमापीकृत ''टीचिंग एटीट्यूड टैस्ट (ज्ण।ण्ज्ण)'' का प्रयोग किया गया है।

2. कार्य सन्तुष्टि मापन यंत्र

शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि ज्ञात करने के लिए शोध छात्रा द्वारा आर0एस0 मिश्रा, मनोरमा तिवारी और डी0एन0 पाण्डेय द्वारा निर्मित एवं प्रमापीकृत परीक्षण कार्य सन्तुष्टि मापन यंत्र का प्रयोग किया गया है।

शोध में प्रयुक्त सांख्यिकी विधि

प्रस्तुत शोध में सांख्यिकी की मध्यमान, मानक विचलन, तथा टी–परीक्षण विधियों का प्रयोग किया गया है।

मध्यमान (Mean) का सूत्र–

$$M = \frac{X}{N}$$

मानक विचलन (SD) का सूत्री–

$$SD = \frac{d2}{N}$$

टी–परीक्षण (T-Test) का सूत्र–

't'= M1 - M2

सारणी 1: माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षक–शिक्षिकाओं की शिक्षण–अभिक्षमता

क्र0 सं0	शिक्षक वर्ग	कुल संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात
1.	कुल माध्यमिक विद्यालय शिक्षक	340	76.212	47.151	0.42
2.	कुल माध्यमिक विद्यालय शिक्षिका	210	77.967	48.396	

df (550-2) = 548 पर सारणीमान – अ. 5: विश्वास के स्तर पर 1.96
ब. 1: विश्वास के स्तर पर 2.59

उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि गणना द्वारा प्राप्त ब्त का मान 0. 42 है जबकि कत्रि548 पर टी–तालिका देखने पर पता चलता है कि 5 प्रतिशत विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिये आवश्यक ब्त का मान 1.96 तथा 1 प्रतिशत विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिये आवश्यक ब्त का मान 2.59 होना चाहिये। यहाँ गणना से प्राप्त ब्त का मान सारणी में दिये गये दोनो स्तरों पर सार्थकता के लिए आवश्यक ब्त के मानों से कम है, अतः यहाँ शोधकर्ती की निराकरणीय परिकल्पना (छनसस– भ्लचवजीमेपे) स्वीकृत (।बबमचज) की जाती है और कहा जा सकता है कि माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं की शिक्षण अभिक्षमता में कोई अन्तर नहीं है।

सारणी 2: माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षण–शिक्षिकाओं की व्यावसायिक सन्तुष्टि

क्र0 सं0	शिक्षक वर्ग	कुल संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात
1.	कुल माध्यमिक विद्यालय शिक्षक	340	126.61	18.27	1.08
2.	कुल माध्यमिक विद्यालय शिक्षिका	210	124.96	16.00	

d, f (550-2) = 548 पर सारणीमान – अ. 5: विश्वास के स्तर पर 1.96
ब. 1: विश्वास के स्तर पर 2.59

उपर्युक्त सारणी में स्पष्ट है कि गणना द्वारा प्राप्त ब्त का मान 1. 08 है जबकि df=548 पर टी–तालिका देखने पर पता चलता है कि 5 प्रतिशत विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिये आवश्यक ब्त का मान 1.96 तथा 1 प्रतिशत विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिये आवश्यक ब्त का मान 2.59 होना चाहिये। अतः यहाँ गणना से प्राप्त ब्त का मान सारणी में दिये गये दोनो स्तरों पर सार्थकता के लिए आवश्यक ब्त के मानों से कम है, अतः यहाँ शोधकर्ती की निराकरणीय परिकल्पना (Null-Hypothesis) स्वीकृत (Accept) की जाती है, और कहा जा सकता है कि माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं की व्यावसायिक सन्तुष्टि में कोई अन्तर नहीं है।

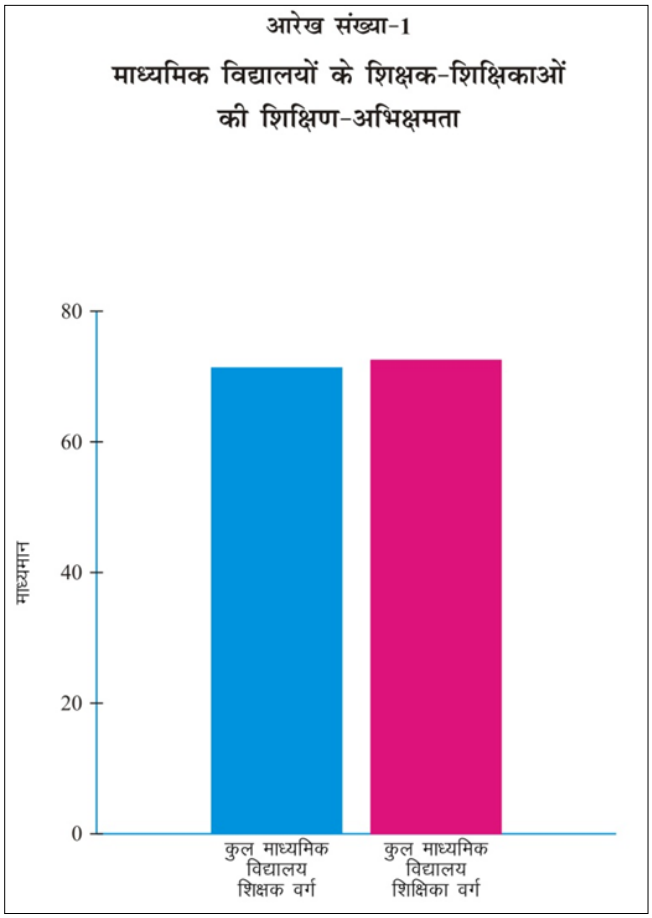

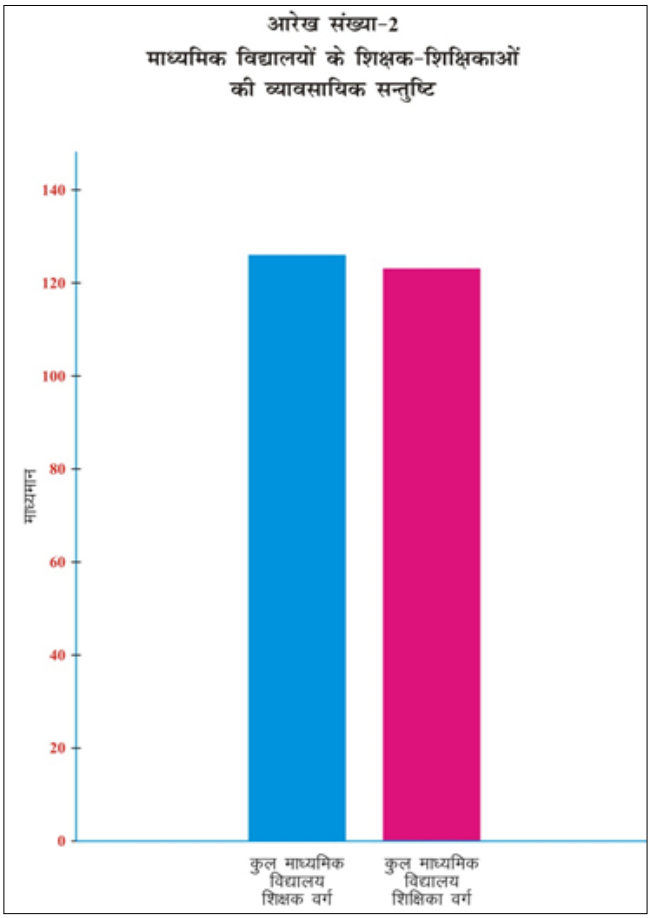

सुझाव

शोधकर्ती ने समस्या के चुनाव में पर्याप्त सतर्कता बरती थी और यह प्रयास किया है कि माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण अभिक्षमता का उनकी कार्य सन्तुष्टि पर पड़ने वाले प्रभाव का विधिवत अध्ययन किया जाये। इसीलिए शोधकर्ती ने ऊधमसिंहनगर में अवस्थित सरकारी, अर्द्धसरकारी, प्राइवेट, माध्यमिक विद्यालयों के 550 शिक्षक एवं शिक्षिकाओं का प्रतिदर्श लेकर अपना अध्ययन पूर्ण किया है। वर्तमान शोध और गुणवत्ता लाने हेतु निम्न बिन्दुओं पर ध्यान दिया जाना चाहिए–

1. शोध न्यादर्श में सम्मिलित शिक्षक–शिक्षिकाओं को आधार बनाकर उनकी कार्य संतुष्टि का अध्ययन करना चाहिए।
2. शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि एवं शिक्षण अभिक्षमता उनके शिक्षण अनुभव से भी प्रभावित हो सकती है। अतः अध्ययन में शिक्षक शिक्षिकाओं के शिक्षण अनुभव को भी आधार बनाया जा सकता है।
3. विद्यालयों के संगठनात्मक वातावरण का विद्यालयों की प्रत्येक गतिविधि पनर भी प्रभाव पड़ता है और विद्यालय की गतिविधियों से शिक्षक भी प्रभावित होता है जो उसकी कार्य सन्तुष्टि को प्रभावित करती है। अतः विद्यालयों के संगठनात्मक वातावरण को भी अध्ययन का आधार बनाया जा सकता है।

सन्दर्भ सूची

1. लाल, रमन बिहारी, 'पलोड, सुनीता' 2017, समकालीन भारतीय समाज में शिक्षा, विनय रखेजा, मेरठ, पृष्ठ–238.
2. 'बाला, डॉ0 निधि' 'बाजपेयी, डॉ0 अमिता' 'शुक्ला, डॉ0 सावित्री– 2001, शिक्षा के दार्शनिक व समाज शास्त्रीय आधार, आलोक प्रकाशन लखनऊ, इलाहाबाद, पृष्ठ संख्या–401, 402, 403.
3. 'शुक्ला, डॉ0 सी0एस0 2009, भारत में शैक्षिक प्रणाली का विकास, इण्टरनेशनल पब्लिशिग हाउस, मेरठ, पृष्ठ संख्या–238.
4. 'तोमर, डॉ0 गजेन्द्र सिंह, 2016, 'विद्यालय संगठन एवं प्रबन्ध, आर0 लाल बुक डिपो मेरठ, पृष्ठ संख्या–146, 481.
5. 'शर्मा, डॉ0 आर0ए0' "शिक्षा अनुसन्धान के मूल तत्व एवं शोध प्रक्रिया", विनय रखेजा, मेरठ, पृष्ठ संख्या–153, 198.